हिदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के दस थाट

स्वरांजली कला साधक

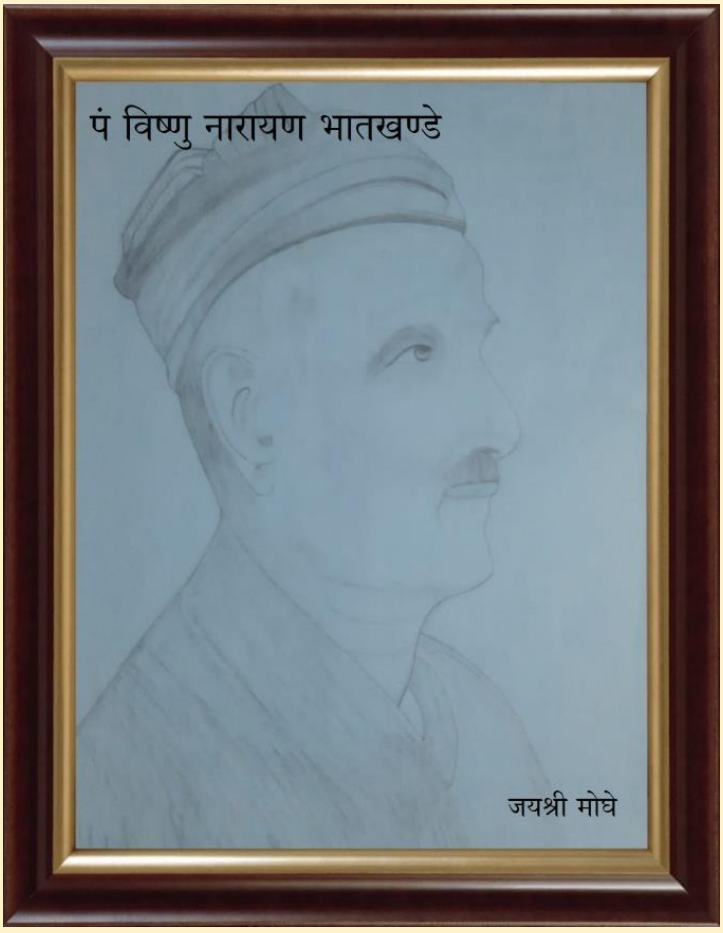

स्वरांजली कला साधक

हिदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के दस थाट

हिदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सभी राग मूल दस थाटों से उत्पन्न हुए हैं।

इस ई -पुस्तक में, इन थाटों को उनके स्वर प्रयोग के आधार पर सरल भाषा एवं तालिका के माध्यम से समझाया गया है।

संगीत शास्त्र में अभिरुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए यह जानकारी अत्यंत उपयोगी है।

|| दशमित ठाठ चतुर गुनि माने,

यमन बिलावल और ख़माजी

भैरव पूर्वी मारूव काफी

आसा भैरवी तोड़ी बखाने ||

कल्याण *यमन*

बिलावल

खमाज

भैरव

पूर्वी

मारवा

काफी

आसावरी

भैरवी

तोड़ी

स्वरांजली कला साधक

थाट कल्याण

सा	रे	ग	म॑	प	ध	नि	सां
सां	नि	ध	प	म॑	ग	रे	सा

शुद्ध स्वर : षडज, ऋषभ,, गंधार, पंचम धैवत एवं निषाद

कोमल स्वर :

तीव्र स्वर : मध्यम

थाट कल्याण के प्रचलित राग

- यमन
- भूपाली
- केदार
- कामोद

थाट बिलावल

सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां
सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा

शुद्ध स्वर : षडज, ऋषभ, गंधार ,मध्यम, पंचम धैवत एवं निषाद

कोमल स्वर :

तीव्र स्वर :

थाट बिलावल के प्रचलित राग

- शुद्ध बिलावल
- अल्हैया बिलावल
- देशकार
- दुर्गा

थाट खमाज

सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां
सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा

शुद्ध स्वर : षडज, ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत

कोमल स्वर : निषाद

तीव्र स्वर :

थाट खमाज के प्रचलित राग

- खमाज
- झिंझोटी
- रागेश्री
- जैजैवंती

थाट भैरव

सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां
सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा

शुद्ध स्वर : षडज, गंधार, मध्यम, पंचम एवं निषाद

कोमल स्वर : ऋषभ, धैवत

तीव्र स्वर :

थाट भैरव के प्रचलित राग

- भैरव
- कालिंगड़ा
- अहीर भैरव
- विभास

थाट पूर्वी

सा	रे	ग	म॑	प	ध	नि	सां
सां	नि	ध	प	म॑	ग	रे	सा

शुद्ध स्वर : षडज, गंधार, पंचम, एवं निषाद

कोमल स्वर : ऋषभ, धैवत

तीव्र स्वर : मध्यम

थाट पूर्वी के प्रचलित राग

- पूर्वी
- पूरिया धनाश्री
- वसंत
- श्री

थाट मारवा

सा	रे	ग	म॑	प	ध	नि	सां
सां	नि	ध	प	म॑	ग	रे	सा

शुद्ध स्वर : षडज, गंधार, पंचम, धैवत एवं निषाद

कोमल स्वर : ऋषभ,

तीव्र स्वर : मध्यम

थाट मारवा के प्रचलित राग

- मारवा
- पूरिया
- सोहनी
- ललित

थाट काफी

सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां
सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा

शुद्ध स्वर : षडज, ऋषभ, मध्यम, पंचम, धैवत

कोमल स्वर : गंधार, एवं निषाद,

तीव्र स्वर :

थाट काफी के प्रचलित राग

- काफी
- बागेश्री
- भीमपलासी
- बहार

थाट आसावरी

सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां
सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा

शुद्ध स्वर : षडज, ऋषभ, मध्यम, पंचम

कोमल स्वर : गंधार, धैवत एवं निषाद,

तीव्र स्वर :

थाट आसावरी के प्रचलित राग

- आसावरी
- जौनपुरी
- दरबारी कान्हड़ा
- अड़ाणा

थाट भैरवी

सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां
सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा

शुद्ध स्वर : षडज, मध्यम, पंचम

कोमल स्वर : ऋषभ, गंधार, धैवत एवं निषाद,

तीव्र स्वर :

थाट भैरवी के प्रचलित राग

- भैरवी
- मालकौंस
- बिलासखानी तोड़ी
- धनाश्री

थाट तोड़ी

सा	रे	ग	मं	प	ध	नि	सां
सां	नि	ध	प	मं	ग	रे	सा

स्वर वर्णन :

शुद्ध स्वर : षडज, , पंचम, निषाद

कोमल स्वर : ऋषभ, गंधार, धैवत

तीव्र स्वर : मध्यम

थाट तोड़ी के प्रचलित राग

- तोड़ी
- गुर्जरी तोड़ी
- मुलतानी

यहाँ दी गयी जानकारी इसके पूर्व अनेक माध्यमों से प्रसारित होती रही है। विभिन्न थाटों से अनेक राग उत्पन्न होते हैं। यहाँ सिर्फ सांकेतिक कुछ रागों को ही दर्शाया गया है ।

व्यंकटमखी के 72 थाट , 484 राग, एवं विशिष्ट राग परिचय इत्यादि हमारी अन्य ई-पुस्तकों में प्रकाशित है। आप उसका लाभ ले सकते हैं।

सांगीतिक विषय पर यदि कोई विशेष जानकारी चाहिए तो, संपर्क करें।

यह सुविधा निशुल्क उपलब्ध है।

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर सभी गुरुजनों को सादर समर्पित

स्वरांजली कला साधक

स्वरांजली कला साधक

स्वरांजली कला साधक